विसर्जन

दोहा:- बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुव प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय।।१।।
पूजन विधि जानों नहीं, नहि जानौं आव्हान।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान।।२।।
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।३।।
ध्याये जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमान।
ते सब मेरे मन बसो, चौबीसो भगवान।।४।।

इत्याशीर्वादः।

गुरू की स्तुति

परमासागर परमगुरु शरणा आयी तोय।
भवसागर के बीच में डूबत राखो मोय।।
नरकां का दुख देखता थर-थर कांपी काय।
अर्ज करूं मोटा धणी दुख सहा न जाय।।
हाथ जोड़ विनती करूं लूल लूल लागूं पाय।
चौबीसों महाराज को बन्दूँ बारम्बार।।

ॐ ह्रीं नर्क गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति, देव गति, चारों गति से छुटकारा हो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

छोटी सी कचोली नेमीनाथ जी की छोल भरी।
नेमीनाथ जी गया गिरनार आग मिल्याया सपनाचार।।
दो गोरा, दो सांवला, दो हरीया, दो लाल।
सोलह प्रतिमा स्वर्ण मुखी बन्दूँ बारम्बार।।
ऊँचा करस्यां देवरा नीचा करस्यां पोल।
दर्शन करस्यां भाव से श्री जी के चरणा धोक।।

पुष्पांजली क्षिपेत।